शनिवार, 25 फरवरी, 2023

संदेश

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा नई दिल्ली में 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' के 30वें संस्करण के आयोजन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के आयोजन का यह 50वां वर्ष है। कला-साहित्य, पठन-पाठन एवं चिंतन-मनन के इस अनूठे संगम की पाँच दशकों की गौरवपूर्ण यात्रा उपलब्धियों से परिपूर्ण है।

कहा गया है—**काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्**, अर्थात बुद्धिमान व्यक्ति पठन-पाठन के जरिए अपने समय का सदुपयोग करते हैं। आज हमारे पास ऋषि-मुनियों, दार्शनिकों, चिन्तकों और साहित्यकारों के विचार मुद्रित होकर पुस्तक के रूप में उपलब्ध हैं, जिनके अध्ययन से हम अपने ज्ञान, विचार और संस्कारों को समृद्ध बना सकते हैं।

बदलते युग के साथ लोगों की पढ़ने की आदतों में बदलाव आया है और नई पीढ़ी के बीच किताबों के डिजिटल फॉर्मेट भी तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। किताबें फिजिकल रूप में हों या डिजिटल रूप में, इनके साथ मित्रता हमेशा बनी रहनी चाहिए। किताबें ही हमें परंपरागत ज्ञान सौंपते हुए, नवाचार एवं अनुसंधान के लिए तर्क-वितर्क और गहराई से सोचने का सामर्थ्य प्रदान करती हैं।

आजादी के अमृत कालखंड में हमने अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आगे बढ़ने का प्रण लिया है। आजादी की लड़ाई के कई ऐसे भूले-बिसरे अध्याय हैं, जिनके गौरव को देश के सामने लाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। मुझे खुशी है कि इस बार पुस्तक मेले की थीम—'आजादी का अमृत महोत्सव' है, जो हमारे इस संकल्प को मजबूती प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक मेले के माध्यम से हम स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को पुनर्जीवित कर, उसे भावी पीढ़ी तक पहुँचाने में सफल होंगे।

विभिन्न साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन के साथ देश-विदेश के लेखकों एवं रचनाकारों की विभिन्न भाषाओं, विधाओं और विषयों पर लिखी गई पुस्तकें, पुस्तक प्रेमियों तक पहुँचाने में विश्व पुस्तक मेले का योगदान अत्यंत सराहनीय है।

'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' के आयोजकों और मेले में हिस्सा ले रहे प्रकाशकों, वितरकों, लेखकों, मुद्रकों व सभी पुस्तक प्रेमियों को बधाई व भविष्य के सभी प्रयासों के लिए शुभकामनाएँ।

नई दिल्ली
फाल्गुन 02, शक संवत् 1944
21 फरवरी, 2023

(नरेन्द्र मोदी)

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA
INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई है कि 25 फरवरी से 5 मार्च 2023 तक नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के तीसवें संस्करण का आयोजन किया जा रहा है।

पुस्तकें प्राचीन समय से ही मानव जीवन में अमूल्य स्थान रखती आई हैं। यह ज्ञान की अमिट ज्योति होती हैं, जो पाठकों का ज्ञानवर्धन और मार्गदर्शन करती हैं। पुस्तक मेले के आयोजन की समस्त पुस्तक प्रेमियों को पूरे वर्ष प्रतीक्षा रहती है। यह पाठकों, लेखकों और विभिन्न प्रकाशन समूहों की संगम स्थली है जिनकी त्रिवेणी से सभी लाभान्वित होते हैं।

मैं पुस्तक मेले के दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले 'मेला वार्ता' तथा 'फेयर टॉक' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ। मुझे आशा है कि तीसवें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा।

शुभकामनाओं सहित।

(ओम बिरला)

संदेश

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development & Entrepreneurship
Government of India

संदेश

मेरे लिए हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, पुस्तक संस्कृति के विकास एवं संवर्धन के वृहतर लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' के 30वें संस्करण का आयोजन दिनांक 25 फरवरी से 5 मार्च, 2023 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में करने जा रहा है। पुस्तकों के सर्वकालिक महत्व को रेखांकित करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा है कि "पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि पुस्तकें अंतःकरण को उज्ज्वल करती हैं।" मुझे खुशी है कि पुस्तकों के इस महाकुंभ में देश एवं विदेश के एक हजार से अधिक प्रकाशक एवं पुस्तक वितरक, लाखों पुस्तक प्रेमी तथा लब्ध प्रतिष्ठित लेखक अपनी सक्रिय रचनात्मक सहभागिता से सांस्कृतिक सेतु निर्माण का स्तुत्य कार्य कर रहे हैं।

पुस्तकों का यह विराट आयोजन हमारे वैचारिक मानस क्षितिज को विस्तार प्रदान करता है। विभिन्न विचारधाराओं एवं ज्ञान-सारणियों के प्रति प्रतिबद्ध लेखकों एवं पाठकों, व्यवसायियों एवं पुस्तक प्रमियों, विविध साहित्यिक विधाओं एवं ज्ञानानुशासनों के वाङ्गमय की पारस्परिक अंतःक्रिया एवं वाद-विवाद-संवाद से हम बौद्धिक रूप से अधिक सशक्त एवं हृदय से उदार बनते हैं। पढ़ना मानवीय क्रियाकलाप का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। सामूहिक एवं व्यक्तिगत चेतना को गढ़ने में 'पढ़ने की संस्कृति' की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान भाषा, उपनिवेशवाद और धन की निकासी से लेकर आजादी तक की व्यापक बहसें इस पढ़ने की प्रक्रिया का ही परिणाम थी। आजादी के गौरवपूर्ण 75 वर्षों का जश्न मनाने के लिए भारत सरकार 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रही है। मुझे खुशी है कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने पुस्तक मेले की थीम को इस महत्वपूर्ण विषय पर रखा है।

विगत दो-तीन दशकों में आर्थिक उदारीकरण और इंटरनेट की तकनीक ने पुस्तक संस्कृति के परिदृश्य को बहुत निर्णायक ढंग से बदला है। आज पठन-पाठन की परम्परा एवं संस्कृति में बुनियादी बदलाव आये हैं। पढ़ने के पारम्परिक तौर-तरीकों की बहुत बड़ी जगह आज ब्लॉग पोस्ट, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसे वर्चुअल माध्यमों ने ले ली है। लेकिन इस बदलाव के बावजूद भी पुस्तकों के पठन-पाठन का स्थायी महत्व रहेगा। मैं पुस्तक मेले के भव्य आयोजन एवं मेले के दैनिक समाचार बुलेटिन के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा — कौशल भारत, कुशल भारत
MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 518, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

आज़ादी का अमृत महोत्सव
डॉ. सुभाष सरकार
Dr. SUBHAS SARKAR

राज्य मंत्री
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTER OF STATE
FOR EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मैं यह जानकर प्रसन्न हूँ कि 'विश्व पुस्तक मेला' के तीसवें संस्करण का आयोजन 25 फरवरी से 5 मार्च 2023 के बीच प्रगति मैदान, नई दिल्ली में होने जा रहा है।

मेरा मानना है कि पुस्तक पढ़ने से पाठक की एकाग्रता बढ़ती है साथ ही उनमें आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक क्षमता के गुणों का भी विकास होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला और खेल में बहु-विषयक और समग्र शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य रखती है। शिक्षा नीति में पुस्तक पठन-पाठन के महत्व पर बल दिया गया है।

मैं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित **'मेला वार्ता'** एवं **'फेयर टॉक'** की सफलता की कामना करता हूँ। साथ ही, मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'विश्व पुस्तक मेला' पाठकों को वैश्विक पुस्तक भंडार का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करेगा।

(डॉ. सुभाष सरकार)

Office : Room No. 104-A, 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001,
Tel. : +91-11-23384327, 23381302, Fax No. : +91-11-23782052
E-mail : mosedu-ss@gov.in

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2023 का उद्घाटन

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' के 30वें संस्करण का आगाज हो चुका है। भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान एशिया के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित मेले का उद्घाटन करेंगे। इस अवसर पर सिंडीकेट नेशनल डे ल'एडिशन के अध्यक्ष श्री वेनसौं मौंताईन, नोबेल पुरस्कार विजेता फ्रांसीसी लेखिका सुश्री आनी ओरनौ, भारत में फ्रांस के राजदूत श्री इमैनुएल लैना, भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) के अध्यक्ष श्री प्रदीप सिंह खरोला, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा और न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक उपस्थित रहेंगे।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा सन् 1972 से प्रारंभ विश्व पुस्तक मेला का यह 30वाँ पड़ाव है। विदित हो कि वैश्विक महामारी कोरोना के चलते वर्ष 2021 का 29वाँ 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला' वर्चुअल संपन्न हुआ था, जबकि इस महामारी के कारण वर्ष 2022 का नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला संपन्न नहीं हो सका था। यह हर्ष का विषय है कि दो वर्षों के अंतराल के बाद यह मेला भौतिक रूप से प्रगति मैदान में आयोजित किया जा रहा है। एक बार फिर पुस्तकें और पुस्तकप्रेमी आमने-सामने होंगे। उन्हें अपनी पसंद की पुस्तक चुनने का अवसर मिलेगा। इस विशाल पुस्तक मेला में लगभग 1500 स्टॉल स्थापित किए गए हैं, जिसमें 650 भारतीय प्रकाशकों के साथ-साथ लगभग 40 विदेशी प्रकाशक अपनी नवीनतम पुस्तकों के साथ उपस्थित रहेंगे।

श्री धर्मेन्द्र प्रधान
शिक्षा मंत्री (उच्चतर शिक्षा), भारत सरकार

श्री वेनसौं मौंताईन
अध्यक्ष, सिंडीकैट नेशनल डे ल'एडिशन

सुश्री आनी ओरनौ
नोबेल पुरस्कार विजेता फ्रांसीसी लेखिका

इस 30वें संस्करण का अतिथि देश 'फ्रांस' है। पुस्तक मेले में आए पुस्तक प्रेमियों के लिए यह कौतूहल का विषय है कि उन्हें भारतीय भाषाओं और दुनिया के तमाम देशों के साहित्य के साथ फ्रांस का साहित्य भी देखने और पढ़ने को मिलेगा।

श्री इमैनुएल लैना
भारत में फ्रांस के राजदूत

श्री प्रदीप सिंह खरोला
अध्यक्ष, आईटीपीओ

प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा
अध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

श्री युवराज मलिक
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला साहित्य के साथ ही कला और संस्कृति का भी संगम होता है। अतः हर बार की तरह इस बार भी प्रगति मैदान में वैश्विक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का इंद्रधनुषी सम्मिलन भी होगा। पुस्तक मेले के इस अवतार में नई शिक्षा नीति 2020 को भी स्थान दिया गया है जो मेले का दूसरा सबसे बड़ा आकर्षण है। ध्यातव्य है कि नई शिक्षा नीति को भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई, 2020 को घोषित किया गया। सन् 1986 में जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला नया परिवर्तन है। हालाँकि वर्ष 1992 में इसमें संशोधन किया गया था। इसके लिए हॉल सं. 4 (प्रथम तल) में एक मंडप स्थापित किया गया है। यहाँ नई शिक्षा नीति से जुड़े पैनल चर्चा जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे।

इस पुस्तक मेले में अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग को समर्पित ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी20) के लिए एक मंडप हॉल सं. 4 में स्थापित है। जी20 सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ध्यातव्य है कि 18वाँ जी20 शिखर सम्मेलन सितंबर माह में दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है।

गत वर्षों की भाँति नई विशेषताओं के साथ लेखक मंच पुनः लेखक, पाठक और प्रकाशकों के लिए संगम स्थल का साक्षी बनेगा। यहाँ लेखक-प्रकाशक अपनी नई पुस्तकों का न सिर्फ लोकार्पण करते हैं, वरन् लेखक अपने पाठकों से अनुभव, लेखक-प्रक्रिया और विचार भी साझा करते हैं। पाठकों को यह अवसर मिलता है कि वे अपने पसंदीदा लेखकों से सीधे संवाद कर सकते हैं, उनके ऑटोग्राफ ले सकते हैं। यह मंच हॉल सं. 2 में स्थापित किया गया है।

ध्यातव्य है कि इस बार पुस्तक मेले का केंद्रीय विषय है—'आजादी का अमृत महोत्सव'। 'आजादी का अमृत महोत्सव' प्रगतिशील भारत की आजादी के 75 साल और संस्कृति एवं उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है। यह महोत्सव आजादी के स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है, जिन्होंने न केवल भारत को आजाद कराया, बल्कि उसे विकासवादी यात्रा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत की आजादी को 15 अगस्त, 2022 को 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए थीम-आधारित मंडप का निर्माण हॉल संख्या 5 में किया गया है, जहाँ प्रतिदिन भारत की आजादी की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करने वाली गोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। यहाँ प्रदर्शित पुस्तकों का एक सूची-पत्र भी निःशुल्क उपलब्ध होगा।

हॉल सं. 3 में बनाए गए बाल मंडप में पूरे दिन बालोपयोगी गतिविधियाँ होंगी। बाल साहित्य के विकास एवं प्रोन्नयन को समर्पित, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र इस अवसर पर बड़े पैमाने पर बाल-आधारित अनेकानेक कार्यक्रमों का समन्वय-आयोजन करेगा। इसके अंतर्गत बाल पुस्तकों की प्रदर्शनी, कथावाचन, संगोष्ठी, कार्यशाला, पेंटिंग प्रतियोगिता, खुद करके देखो आदि आयोजन किए जाएँगे। बाल साहित्य के सम्मानित लेखक, चित्रकार, अनुवादक, प्रकाशक आदि इस अवसर पर अपने बाल पाठकों से रू-ब-रू होंगे।

भारतीय और विदेशी प्रकाशक एक साथ मिल-बैठकर प्रतिलिप्यधिकार आदि का आदान-प्रदान कर सकें, इस हेतु विशेष रूप से निर्मित प्रतिलिप्यधिकार मंच (राइट्स टेबल) इस बार भी है। दुनियाभर के प्रकाशक यहाँ आमने-सामने बैठकर प्रकाशन/अनुवाद प्रतिलिप्यधिकार आदि के विनिमय की संभावना तलाश सकेंगे। इस बार इस 'प्रतिलिप्यधिकार मंच' का आयोजन 27-28 फरवरी, 2023 को सुबह 11 बजे प्रगति मैदान के हॉल नं. 3 (मेजानिन) में किया जा रहा है। इसके अलावा हॉल सं. 4 में ही सेमिनार हॉल स्थापित है जहाँ विभिन्न विषयों पर संगोष्ठियाँ और सेमिनार आयोजित किए जाएँगे। इसके उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. अंगुस फिलिप्स, निदेशक, ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल सेंटर फॉर पब्लिशिंग, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी तथा विशिष्ठ अतिथि 'द फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स' के अध्यक्ष श्री रमेश मित्तल, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष प्रो. गोविंद शर्मा और न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक उपस्थित रहेंगे।

गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी 'सीईओ स्पीक' पुस्तक मेले का एक प्रमुख आकर्षण है। 26 फरवरी को सुबह 8:30 बजे होने वाले इस फोरम का उद्देश्य होता है न्यास-अध्यक्ष के साथ प्रकाशन की दुनिया के सीईओ आदि पुस्तक एवं प्रकाशन के हित, विकास एवं विस्तार हेतु अभिनव विचार आदि प्रस्तुत कर सकें।

पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत 50 से अधिक भाषाओं में अपनी पुस्तकों के साथ हॉल सं. 2, 3, 5 और 4 (प्रथम तल) में उपस्थित है।

यह प्रकाशन जगत का सबसे बड़ा कुंभ है जिसमें सेमिनार, साहित्यिक कार्यक्रम, कार्यशाला, बाल गतिविधियाँ, पुस्तक विमोचन, लेखकों के साथ चर्चा, विशेष चित्र प्रदर्शनी, पुस्तक मेले के केंद्रीय विषय पर फिल्मांकन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे।

दूर देश से आईं प्रकाशन संस्थाएँ

वैसे तो नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला में कई देशों की भागीदारी है, 31 विदेशी प्रकाशक हॉल सं. 4 में हजारों पुस्तकों के साथ उपस्थित हैं। इस बार का अतिथि देश 'फ्रांस' है और वहाँ से एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल मेले में शामिल हुआ है। मिस्र, हंगरी, ईरान, नेपाल, नाइजीरिया, पुर्तगाल, स्पेन, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात के साथ-साथ जी20 में शामिल सभी 20 देशों के प्रकाशक और संस्थाएँ इस पुस्तक मेले में सहभागी हैं।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला में विदेशी भागीदार

1. ब्यूरो इंटरनेशनल डे ल'एडिशन फ्रांकैस, फ्रांस; 2. कैपेक्सिल; 3. जनरल इजीप्शियन बुक ऑर्गेनाइजेशन, मिस्र; 4. इंस्टीट्यूटो कैमोस-पोर्तुगीज एंबेसी कल्चर सेंटर, पुर्तगाल; 5. इंस्टीट्यूटो सर्वेन्तेज - एंबेसी ऑफ स्पेन, स्पेन; 6. ईरान बुक एंड लिटरेचर हाउस, ईरान; 7. केबीके ग्लोकल; 8. मार्टीरिया फाउंडेशन फॉर कल्चर एंड डिवेलपमेंट, मिस्र; 9. संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय, तुर्किये गणराज्य, तुर्किये; 10. शिक्षा मंत्रालय, के.एस.ए., सउदी अरब; 11. मुस्लिम काउंसिल ऑफ एल्डर्स, संयुक्त अरब अमीरात; 12. नेपाल इंटरनेशनल बुक फेयर, नेपाल; 13. पेटोफी लिटरेरी फंड, हंगरी; 14. प्रोबुक्स वेंचरर्स नाइजीरिया लिमिटेड, नाइजीरिया; 15. शारजाह बुक अथॉरिटी, संयुक्त अरब अमीरात; 16. श्रीलंका बुक पब्लिशर्स एसोसिएशन, श्रीलंका; 17. द अबूधाबी एरेबिक लैंग्वेज सेंटर, संयुक्त अरब अमीरात; 18. द इंस्टीट्यूट फॉर लिटरेरी ट्रांसलेशन, रूस; 19. ट्रेंड्स रिसर्च एंड एडवाइजरी, संयुक्त अरब अमीरात; 20. यूनेस्को नई दिल्ली; 21. व्हाइट लोटस बुक शॉप, नेपाल।

नई दिल्ली राइट्स टेबल का आयोजन

27-28 फरवरी, 2023

नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच (नई दिल्ली राइट्स टेबल) दो दिवसीय कार्यक्रम है जो भारत तथा विदेशों से आए प्रकाशकों, प्रतिलिप्यधिकार-एजेंटों, अनुवादकों व संपादकों को व्यापार अवसरों का परस्पर लाभ उठाने हेतु एक मंच प्रदान करता है। नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच का आयोजन 27-28 फरवरी, 2023 को सुबह 11 बजे प्रगति मैदान के हॉल नं. 3 (मेजानिन) में किया जा रहा है। यह एक नवीन व्यावसायिक परिवेश में प्रकाशकों के बीच व्यापारिक सत्र आयोजित कर उन्हें अपने अनुभव साझा करने के अवसर प्रदान करेगा। साथ ही, यह अद्वितीय प्रारूप प्रतिभागियों को अपने प्रतिलिप्यधिकार मंच को सुरक्षित करने, परस्पर भेंट करने, अपने उत्पाद एवं विचार प्रस्तुत करने व अंग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध पुस्तकों के अनुवाद एवं अधिकारों के हस्तांतरण हेतु अपनी अभिरुचियों तथा समझौतों को प्रायोगिक तौर पर अंतिम रूप प्रदान करने के भी अवसर प्रदान करेगा।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा शुरू किया गया प्रतिलिप्यधिकार मंच भारतीय पुस्तकों को विदेशों में प्रोन्नत करने के प्रयास का एक भाग है। न्यास अपने इस उपक्रम को भारतीय पुस्तकों के विदेशी भाषाओं में अनुवाद के लिए विदेशी प्रकाशकों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने हेतु हाल ही में प्रारंभ की गई अपनी पहल के माध्यम से अंजाम दे रहा है।

अगर एक्टर न होकर लेखक होता तो मैं फिक्शन लिखता : अभिनेता राहुल रॉय

बॉलीवुड में राहुल रॉय की छवि एक ऐसे अभिनेता के तौर पर शुमार की जाती है जिन्होंने नब्बे के दशक में फिल्म इंडस्ट्री में लवरब्वॉय के रूप में अपनी पहचान बनाई। नई दिल्ली में 09 फरवरी, 1968 को जन्मे राहुल ने अपने कॅरियर की शुरुआत वर्ष 1990 में प्रदर्शित महेश भट्ट की फिल्म 'आशिकी' से की। इस फिल्म में राहुल और अनु अग्रवाल की जोड़ी को दर्शकों ने बेहद पसंद किया।

*वर्ष 1992 में राहुल रॉय को एक बार फिर से महेश भट्ट के निर्देशन में बनी फिल्म 'जुनून' में काम करने का अवसर मिला। इस फिल्म में राहुल ने अपने निगेटिव किरदार से दर्शकों को रोमांचित कर दिया। राहुल ने फिल्म 'सपने साजन के', 'जन्म', 'ग़ज़ब', 'तमाशा', 'दिलवाले', 'कभी न हारे' और 'फिर तेरी कहानी याद आई' में लीड रोल में नजर आए। फिल्मों के अलावा वर्ष 2006 में राहुल रॉय ने रियलिटी शो 'बिग बॉस-सीजन एक' में हिस्सा लिया और विजेता बने। बॉलीवुड सुपरस्टार राहुल रॉय ने **'मेला वार्ता'** से अपने विचार साझा किए :*

आपकी माँ एक लेखिका थीं, वह साहित्य के काफी करीब थीं, ऐसे में आप अपने आपको साहित्य के कितना करीब पाते हैं?

मेरी माँ इंद्रिया रॉय यूनीसेफ में काम करती थीं। 'सैवी मैगजीन' के कवर पेज पर उनके बारे में कई बार आर्टिकल लिखे गए। वह खुद भी लिखने-पढ़ने की काफी शौकीन थीं। माँ की वजह से मेरे अंदर बहुत सारे ऐसे विचार विकसित हुए, जिनके बारे में बता पाना आसान नहीं है। मैं अपने आप को काफी खुशनसीब मानता हूँ कि मुझे ऐसी माँ मिली। माँ ने हमेशा मुझे औरतों की इज़्ज़त करने के लिए प्रेरित किया है।

फिल्म 'आशिकी' में आपका हीरो के लिए चयन कैसे हुआ?

जैसा कि मैंने पहले ही कहा कि मेरी माँ काफी स्ट्रॉन्ग महिला थीं, उनके सहज और मधुर व्यवहार से फिल्म निर्देशक काफी प्रभावित थे। एक दिन बातों-ही-बातों में माँ ने उन्हें मेरी तस्वीर दिखाई और बताया कि वह मॉडलिंग करता है। तस्वीर देखकर भट्ट साहब मुझसे काफी प्रभावित हुए और मिलने के लिए बुलाया और केवल 15 मिनट में मुझे अपनी फिल्म के लिए साइन कर लिया। उस समय मुझे न तो फिल्मों की कोई समझ थी और न ही एक्टिंग ही जानता था, लेकिन भट्ट साहब की मदद से और मेरी मेहनत से यह फिल्म काफी बेहतरीन बनी। आज भी भट्ट जी को अपने गुरु के तौर पर देखता हूँ।

अगर कभी आपको किसी भारतीय ऐतिहासिक महापुरुष का रोल प्ले करने का मौका मिले तो आप किस महापुरुष का रोल प्ले करना पसंद करेंगे और क्यों?

मैं भारतीय सेना में किसी सैन्य अधिकारी का रोल प्ले करना चाहूँगा क्योंकि आजकल किताबों में या किसी अखबार में रोज किसी-न-किसी सैन्य अधिकारी की रियल स्टोरी निकल आती है जो मुझे काफी प्रेरित करती है। मैं इन्हीं रियल स्टोरी के किसी हीरो का रोल प्ले करना चाहूँगा। मुझे भगवद् गीता पढ़ने का भी काफी शौक रहा है। मैं अकसर इसे पढ़ता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि अलग-अलग उम्र में गीता पढ़ने से उसके अर्थ और भी खुलकर सामने आते हैं। मैं एक्टर न होकर अगर कोई लेखक होता तो फिक्शन लिखने का जुनून रखता।

पुस्तकें विचारों की वाहक हैं : हरिवंश नारायण सिंह

*उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में जन्मे राज्यसभा उपसभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह वरिष्ठ पत्रकार, समाजसेवी एवं राजनेता हैं। आपने देश के कई बड़े समाचार पत्रों में काम किया। यही नहीं आपने पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर के अतिरिक्त मीडिया सलाहकार के रूप में भी काम किया है। प्रस्तुत है **'मेला वार्ता'** के संवाददाता से बातचीत–*

आप एक पत्रकार रहे हैं। अब राजनेता भी हैं। आपके जीवन में पुस्तकों की क्या भूमिका रही है?

पत्रकार होना या फिर राजनेता होना अलग बात है। समग्रता में अपने जीवन में पुस्तकों की भूमिका की बात करूँ, तो कहूँगा कि किताबों की बहुत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका रही है। इंसानी जीवन में हर्ष, खुशी, विषाद और सुख के साथ दुख, तनाव का होना या जीवन में उतार-चढ़ाव, आहत-मर्माहत होते रहना स्वाभाविक प्रक्रिया है। ऐसे क्षणों में पुस्तकें ही प्रेरणा देती हैं, आगे की राह बताती हैं, ताकत देती हैं। निजी तौर पर मेरे जीवन में पुस्तकों ने ऐसे क्षणों में हमेशा प्रेरित किया, आगे के लिए ऊर्जावान बनाया। इससे इतर अगर बात करें, तो पुस्तकें हमेशा दुनिया को समग्रता में और व्यापकता के साथ देखने की दृष्टि देती हैं। आप इंसान के जीवन को देखें, अधिक-से-अधिक उम्र 100 साल। औसत उम्र तो इससे भी कम है। यह सृष्टि कितनी पुरानी है? यह ब्रह्मांड विराट है, कल्पना से परे। इंसान उसका एक मामूली हिस्सा। इस तरह एक कालखंड का मामूली हिस्सा जीता है कोई इंसान, लेकिन किताबों की उम्र देखें। हजारों वर्ष पहले लिखी गई चीजें मौजूद हैं? पता नहीं महाभारत जैसा ग्रंथ कब लिखा गया? वाल्मीकि रामायण, वेद, उपनिषद। तमिल में तिरुक्कुरल ग्रंथ है या इसी श्रेणी की भारतीय भाषाओं की दूसरी किताबें आज भी कालजयी हैं। जीवन में दिशा और दृष्टि देने का काम करती हैं किताबें। मीरा, तुलसी, सूर, कबीर, रहीम, रैदास आदि भक्त कवियों की रचनाएँ हैं। दुनिया के साहित्य में शेक्सपियर, मिल्टन, किट्स, शेली आदि ने जो लिखा, उसका महत्व बरकरार है। अगर राजनीति में ही बात करें, इस पेशे या उद्यम से जुड़े लोग भी हमेशा ही लेखन और पठन-पाठन से गहरा रिश्ता रखते रहे हैं। अभी हाल ही सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली कुआन येव ने किताब लिखी है–'सिंगापुर कैसे बदला'। यह किताब दुनियाभर में चर्चित हुई। इसी तरह चीन को बदलने वाले नायक हैं डेंग श्याओ पेंग। पुराने वैश्विक नेताओं में ही बात करें तो चर्चिल से हम भारतीयों की असहमति रही है, लेकिन उनके लेखन को देख सकते हैं और अपने देश में गांधीजी लिखकर प्रेरित करते रहे हैं।

आपकी पसंदीदा पुस्तक कौन-सी है और पसंदीदा लेखक कौन हैं?

इसका जवाब संक्षेप में नहीं दिया जा सकता। किताबें शुरू से जीवन का अभिन्न हिस्सा रही हैं, इसीलिए कितनी किताबों या लेखकों का नाम लूँ? फिर भी अगर बात करूँ, तो अमृत राय ने जिन दो क्लासिक किताबों का अनुवाद किया, दोनों किताबें हमेशा पसंदीदा किताबों की सूची में हैं। हावर्ड फास्ट की रचना 'स्पार्टाकस' का अनुवाद है 'आदिविद्रोही' और दूसरी किताब है 'समरगाथा'। इन दोनों किताबों ने जीवन में गहरा प्रभाव डाला। संघर्ष और सृजन, आत्मसम्मान की बेमिसाल कहानी है दोनों किताबों में। विद्यार्थी जीवन में जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत को पढ़ा, अब भी पसंदीदा हैं। निराला की सरोज स्मृति, राम की शक्तिपूजा जैसी कालजयी चीजें हैं। पंत का प्रकृति से तादात्म्य अद्भुत है। मनुष्य को सृष्टि के विराट सवालों से जोड़ती है। इस तरह प्रसाद की 'कामायनी' पसंद रही। अमृतलाल नागर पसंदीदा उपन्यासकार रहे। बाद में श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी', शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग वैतरणी', फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आंचल', राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' प्रिय रहा। ललित निबंधों में कृष्ण बिहारी मिश्र का लिखा हुआ 'बेहया का जंगल' हिंदी इलाके की सामाजिक-सांस्कृतिक और लौकिक दशा-दिशा को समझने के लिहाज से प्रिय किताब रही। यात्रा वृत्तांतों में कृष्णनाथ की लिखी हुई किताबें जीवन का हिस्सा हैं। आध्यात्मिक किताबों में रुचि रही है। परमहंस योगानंद जी की जीवनी 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ एन योगी' पसंदीदा किताब है। महर्षि अरविंद, रमण महर्षि के साहित्य से आत्मीय अनुराग रहा। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा और योगियों के बारे में पॉल ब्रंटन की कई किताबें प्रिय हैं। साथ में दुनिया में हो रहे बदलाव, टेक्नोलॉजी आदि पर कई किताबें हैं, जो प्रिय किताबों में शामिल हैं। ये कुछ किताबों के नाम मैंने बताए। अनेक किताबें और अनेक लेखक मेरे प्रिय लेखकों में शामिल हैं। ऐसे लेखक, जिनके माध्यम से समय अपना स्वर देता है, प्रिय लेखक सबके रहे हैं, मेरे भी। तुलसीदास का रामचरितमानस, सूर के भजन तो हमेशा ही प्रासंगिक और पाथेय रहेंगे।

आपके अनुसार स्वस्थ समाज के निर्माण में पुस्तकों का योगदान कैसे होता है?

समाज व्यक्ति से ही बनता है। किसी व्यक्ति को गढ़ने में परिवार के सदस्यों, अभिभावकों, समाज और शिक्षकों की भूमिका तो सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती ही है। उसके बाद असर डालने वाली और प्रभावित करने वाली भूमिका किताबों की होती है। बड़े स्तर पर समाज निर्माण की बात करें तो रूसो, वाल्टेयर, मार्क्स, गांधी आदि की पुस्तकों व रचनाओं ने तो इतिहास बदला है। समाज बदलाव की प्रक्रिया को गति दी है। रूसो की किताबों-रचनाओं ने फ्रांस क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार की। इसी तरह मार्क्स से हम सहमत-असहमत हो सकते हैं, लेकिन दुनिया पर उनकी रचनाओं का असर पड़ा। पुस्तकों को विचारों का वाहक माना गया है। पुस्तकें और महापुरुष समाज को बदलते रहे हैं, हमेशा बदलते रहेंगे।

सूचना क्रांति और सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में भौतिक रूप से पुस्तकों का भविष्य देखते हैं आप?

मैं पुस्तकप्रेमी हूँ। मैं यह मानता हूँ कि पुस्तकों का कोई विकल्प नहीं। एक दौर आया जब कहा गया कि प्रिंट मीडिया का भविष्य खतरे में है। खत्म हो जाएगी यह विधा, यानी प्रिंट मीडिया। लेकिन आज देखिए कि प्रिंट मीडिया ने फिर से कैसे अपने को खड़ा किया। प्रिंट तो शाश्वत चीज है। शाश्वत चीजों का माध्यम बदल सकता है, लेकिन इसका महत्व और इसकी उपयोगिता और लोकप्रियता हमेशा रहेगी। हाँ, टेक्नोलॉजी ने गहराई से जीवन और संसार को बदला है। इस टेक्नोलॉजी ने प्रिंट मीडिया व पुस्तकों को भी गहराई से प्रभावित किया है। किंडल, अखबारों का सॉफ्ट वर्जन, डिजीटलाइजेशन, यह सब रहेगा। तकनीक के तौर पर हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित करेगा। पुस्तकों और प्रिंट मीडिया को भी। पर, इसके बीच भी आज पुस्तकों का बाजार देख लीजिए कि वैश्विक स्तर पर कितनी तेजी से पुस्तकों की बिक्री बढ़ी है।

अब ज्यादा-से-ज्यादा डिजीटलाइजेशन व ई-लाइब्रेरी आदि पर जोर है। ऐसे में इस तरह के पुस्तक मेलों की प्रासंगिकता कितनी बचेगी?

डिजीटलाइजेशन तो समय की माँग है चीजों को सुरक्षित-संरक्षित रखने और सुगमता से अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए। इसलिए भौतिक रूप में प्रकाशित चीजों और डिजीटल फार्मेट में वैर-भाव नहीं, दोनों में अन्योन्याश्रय संबंध हैं।

पुस्तकों, पुस्तक मेलों तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास जैसी संस्थाओं की भूमिका कैसी होनी चाहिए?

पुस्तकों, पुस्तक मेलों और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास जैसी संस्थाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होगी। सिर्फ पुस्तक मेला ही क्यों, आज देश में इतने लिटरेचर फेस्टिवल होते हैं, उनकी भी भूमिका होगी। आखिर साहित्य का काम क्या होता है। अतीत को वर्तमान से जोड़ना, भविष्य की चुनौतियों को रेखांकित करना। यही काम हमेशा होता रहा है।

शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
nbt.india
एक: सूते सकलम्

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत सभी पुस्तक प्रेमियों को आमंत्रित करता है

25 फरवरी - 05 मार्च 2023
प्रगति मैदान, नई दिल्ली
प्रातः 11:00 बजे से
रात्रि 8:00 बजे तक

आएँ और विषयों की एक व्यापक शृंखला में से अपनी पसंदीदा पुस्तकों को चुनकर खरीदें।

थीम | THEME
Azadi Ka Amrit Mahotsav

सम्मानित अतिथि देश
GUEST OF HONOUR COUNTRY
FRANCE फ्रांस

हिंदी, अंग्रेजी तथा 55 प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, कविता, जीवनी, लोकोपयोगी विज्ञान, राजनीति, शासन, संस्कृति, भारतीय समाज, भारतीय राज्य, बाल पुस्तकों व नवसाक्षरों हेतु पुस्तकें।

विशेष आकर्षण

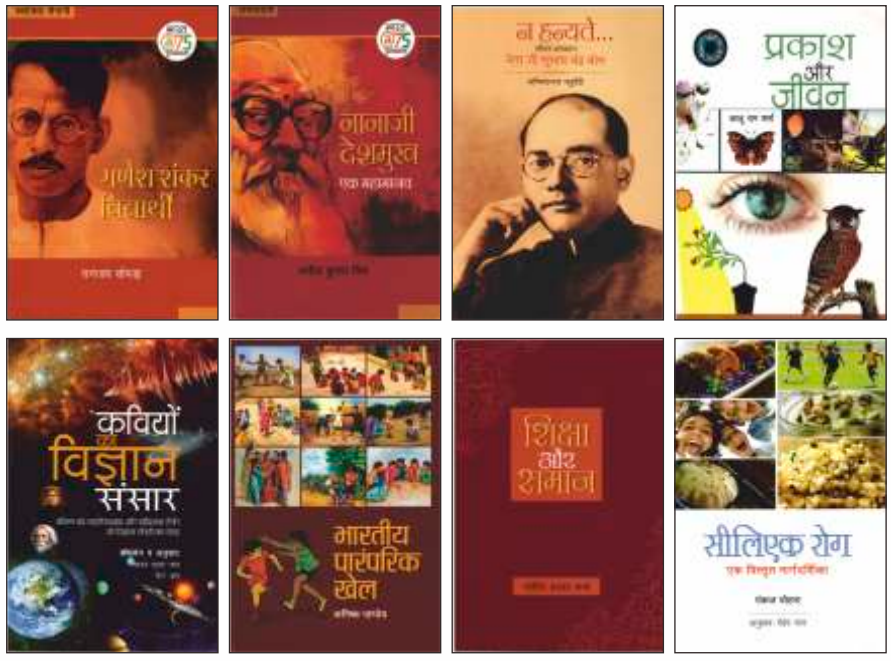

- CEOSpeak — a forum for publishing — सीईओ स्पीक — एक प्रकाशन मंच
- RIGHTS TABLE 2023 — नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच
- भारत @75 — लेखक मंच
- Mentoring YUVA — युवा मंच
- बाल मंडप
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- अंतर्राष्ट्रीय गतिविधि मंच
- थीम मंडप

एनबीटी स्टॉल

हॉल संख्या : 2
स्टॉल संख्या : 48–67
हॉल संख्या : 3
स्टॉल संख्या : 13–42
हॉल संख्या : 4 (प्रथम तल)
स्टॉल संख्या : 04–05
हॉल संख्या : 5
स्टॉल संख्या : 34–63

आयोजक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

देश का नॉलेज पार्टनर
युवा 2.0
G20
सह–आयोजक ITPO

हमसे जुड़ें :

शनिवार, दिनांक 25 फरवरी, 2023 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम

समय	कार्यक्रम	आयोजक
	एनईपी पवेलियन : हॉल सं. 4 (प्रथम तल)	
06.00-08.00	प्रधानमंत्री युवा लेखक 'सत्र I'	रा.पु. न्यास
	इंटरनेशनल इवेंट/युवा कॉर्नर : हॉल सं. 4	
12.30-01.30	फ्रांस–इंटरनेशनल पवेलियन : उद्घाटन सत्र; 'मीट नोबेल प्राइज विनर आनी ओरनौ'	रा.पु. न्यास
03.00-04.00	इंटरनेशनल पवेलियन–'एन ऑवर विद चिल्ड्रेन बुक्स स्टार : सूसी मॉर्गेस्टर्न'	रा.पु. न्यास
04.00-05.00	इंटरनेशनल पवेलियन : 'व्हॉट्स अप इन द फ्रेंच ग्राफिक नॉवेल सीन विद जीना अबीराकेड, साइमन लामॉरेट, लीसा मंडेल, मैथ्यू बरट्रेंड'	रा.पु. न्यास
	थीम पवेलियन : हॉल सं. 5	
01.45-02.30	श्री अश्विन सांघी के साथ प्राइम टाइम चर्चा	रा.पु. न्यास
04.30-06.00	प्रधानमंत्री युवा सत्र/भगत सिंह के पौत्र श्री यादवेन्द्र संधू के साथ प्राइम टाइम चर्चा	रा.पु. न्यास
06.00-07.00	परमवीर चक्र विजेता सूबेदार मेजर संजय कुमार के साथ शौर्यगाथा कार्यक्रम	रा.पु. न्यास
	सेमिनार हॉल : हॉल सं. 4	
02.00-03.30	'पैसिव वेल्थ क्रिएशन' विषय पर चर्चा	पेनडाउन प्रेस
04.00-05.30	'स्टोरीटेलिंग मेड ईजी' पुस्तक विमोचन	पीतांबर पब्लिशिंग कंपनी प्रा.लि.
06.00-07.30	'गृहस्थ योगी-योगीराज श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय द्वारा प्राप्त क्रियायोग के शाश्वत आध्यात्मिक विज्ञान' विषय पर सेमिनार	योगीराज श्यामाचरण मिशन
	बाल मंडप : हॉल सं. 3	
11.00-12.00	व्याख्यान 'ए नेस्ट्फुल ऑफ लाइट'; *संयोजक* : खारतिका नायर, जोएले जोल्लिवे	फ्रांसीसी प्रतिनिधिमंडल
12.15-01.15	छोटे बच्चों को कैसे पढ़ाया और समझाया जाए?; *संयोजक* : एनेस्टेसिया ओरलोवा	रूसी प्रतिनिधिमंडल
01.30-02.00	पुस्तक वाचन कला, ओडिसी नृत्य कार्यक्रम; *संयोजक* : जया मेहता	
02.15-03.00	वेक्सिलोलॉजी पर सत्र; *संयोजक* : मोहित गुप्ता	फ्रेंड्स ऑफ बुक्स
03.15-04.15	कहानी वाचन सत्र; *कहानी वाचक* : डॉ. जयश्री सेठी	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
04.30	AMRITPEX-2023 स्टाम्प प्रतियोगिता विजेताओं का सम्मान; *संयोजक* : अध्यक्ष, रा.पु. न्यास; निदेशक, रा.पु. न्यास;	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
	सांस्कृतिक कार्यक्रम	
05.00-06.00	कथक नृत्य	कथक केंद्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
06.00-07.00	गान एवं नृत्य	केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

पुस्तक मेला के बारे में सामान्य जानकारी

प्रगति मैदान : कहाँ पर क्या

मेले की अवधि	:	25 फरवरी -05 मार्च, 2023
समय	:	प्रातः 11 से सायं 8 बजे तक
स्थान	:	हॉल सं. 2 से 5

हॉल संख्या 5

थीम मंडप (आजादी का अमृत महोत्सव)
ऑथर्स कॉर्नर

हॉल संख्या 4

गेस्ट ऑफ ऑनर पवेलियन-फ्रांस

जी20 पवेलियन

बिजनेस लाउंज (व्यापार कक्ष)

इंटरनेशनल इवेंट्स कॉर्नर

सेमिनार हॉल

हॉल संख्या 4 (प्रथम तल)

नई शिक्षा नीति 2020 पवेलियन

हॉल संख्या 3

बाल मंडप

हॉल संख्या 3 (मेजानिन)

नई दिल्ली राइट्स टेबल

हॉल संख्या 2

लेखक मंच

प्रवेश : गेट नं 4 (भैरों मार्ग) और गेट नं 10 (मेट्रो स्टेशन के पास)।

नोट : व्हील चेयर की सुविधा गेट नं 4 और 10 पर उपलब्ध है।

भारतीय संस्कृति की झलक दिखाते सांस्कृतिक कार्यक्रम

गत वर्षों की भाँति नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2023 का यह संस्करण भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सराबोर रहेगा। यहाँ लोक संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। यहाँ लोक कलाकार विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुतियाँ देते हैं। ये प्रस्तुतियाँ मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धन भी करती हैं। हम एक स्थान पर बैठकर संपूर्ण भारत के दर्शन कर पाते हैं। एंफीथियेटर में आयोजित हर कार्यक्रम आम जनमानस को गुदगुदाता है, हँसाता है, चिंतन के बिंदु देता है और यह प्रश्न पूछता है कि हम अपनी संस्कृति के प्रति कितना जागरूक हैं, हम अपनी संस्कृति के बारे में कितना ज्ञान रखते हैं। यहाँ गत वर्षों की भाँति, लोक नाट्य, लघुनाटिका, नृत्य प्रस्तुति, शास्त्रीय संगीत से संबंधित प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं। यह दर्शनीय है कि लोक संस्कृति से जुड़े कार्यक्रम स्थानीय पारंपरिक परिधान में आयोजित होते हैं जो न केवल दर्शकों और श्रोताओं का मन मोह लेता है, अपितु हम स्थानीय संस्कृति से रू-ब-रू होते हैं। इसके अलावा यहाँ कवि सम्मेलन, मुशायरा, थीम आधारित प्रस्तुति मुख्य आकर्षण होते हैं। इस वर्ष संस्कृति मंत्रालय, सेंट्रल ब्यूरो कम्युनिकेशन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार तथा सतयुग दर्शन ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएँगी। ये कार्यक्रम शाम 5 बजे से 7 बजे तक एंफीथियेटर में आयोजित किए जाएँगे।

भाषावार प्रकाशक

• 1. हिंदी : 178 • 2. उर्दू : 19 • 3. संस्कृत : 3 • 4. मलयालम : 3 • 5. पंजाबी : 7 • 6. तमिल : 2
• 7. बांग्ला : 4 • 8. अंग्रेजी : 325 • 9. असमिया : 1 • 10. सिंधी : 2 • 11. गुजराती : 1 • 12. मैथिली : 2

हमसे यहाँ भी जुड़ें

https://www.twitter.com/nbt_india | https://www.facebook.com/nationalbooktrustindia | https://www.linkedin.com/company/nationalbooktrustindia
https://www.youtube.com/nbtindia | https://www.instagram.com/nbtindia | https://www.kooapp.com/profile/nbtindia

अधिक जानकारी के लिए **www.nbtindia.gov.in** पर जाएँ

मेला वार्ता के लिए विज्ञापन, समाचार, सूचना एवं सुझाव

इस ई-मेल पर भेजे जा सकते हैं– **melavartandwbf@gmail.com**
प्रकाशन हेतु सामग्री मेला वार्ता के **हॉल संख्या 4** के पास स्थित कार्यालय को भी दी जा सकती है।
विज्ञापन की दर इस प्रकार है : एक कॉलम, एक-चौथाई पेज–एक दिन के लिए रु. **3,000/- ;**
सभी अंकों के लिए मात्र रु. **25,000/-** विज्ञापन कम-से-कम एक दिन पहले भुगतान के साथ कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

संपादकीय सहयोग
विजय कुमार
कमलेश पाण्डेय
डॉ. अकरम हुसैन

उत्पादन
पवन दूबे

लेआउट एवं सज्जा
ऋतुराज शर्मा

टंकण
भानुप्रिया

संवाददाता
अर्चिता नयन
कंचन

मेला वार्ता, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 30वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्री युवराज मलिक, *निदेशक*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित एवं मे. सालासर इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301 द्वारा मुद्रित।